अध्याय 19

सदोम और अमोरा का विनाश

लूत सदोम और अमोरा के लिए अब्राहम के मध्यस्थ करने के बावजूद (18:23-33), यह दुष्टता से भरे नगर नाश होने के लिए ही ठहराए गये थे क्योंकि वे अपने दुष्ट कृत्यों में ही संलग्न थे। इस पाठ में, उनकी सारी बुराइयां दर्शायी गयी हैं (19:1-11)। परमेश्वर की दया लूत के छुड़ाए जाने में देखी जा सकती है (19:12-22), जबकि उसका न्याय सदोम और अमोरा के विनाश में दिखाया गया है (19:23-29)। इस अध्याय का अंत लूत और उसकी बेटियों के साथ अगम्यागामी यौन सम्बन्ध बनाये जाने पर होता है, जो मोआब और अम्मोन के प्रारम्भ का वर्णन करता है (19:30-38)। बाद के समय में, यह राष्ट्र इस्राएल की पूर्वी सीमा पर दिखाई देंगे।

लोगों की दुष्टता का वर्णन (19:1-11)

[1]सांझ को वे दो दूत सदोम के पास आए: और लूत सदोम के फाटक के पास बैठा था: सो उन को देख कर वह उन से भेंट करने के लिये उठा; और मुंह के बल झुक कर दण्डवत कर कहा; [2]हे मेरे प्रभुओं, अपने दास के घर में पधारिए, और रात भर विश्राम कीजिए, और अपने पांव धोइये, फिर भोर को उठ कर अपने मार्ग पर जाइए। उन्होंने कहा, न ही; हम चौक ही में रात बिताएंगे। [3]और उसने उन से बहुत बिनती करके उन्हें मनाया; सो वे उसके साथ चल कर उसके घर में आए; और उसने उनके लिये जेवनार तैयार की, और बिना खमीर की रोटियां बनाकर उन को खिलाई। [4]उनके सो जाने के पहिले, उस सदोम नगर के पुरूषों ने, जवानों से ले कर बूढ़ों तक, वरन चारों ओर के सब लोगों ने आकर उस घर को घेर लिया; [5]और लूत को पुकार कर कहने लगे, कि जो पुरुष आज रात को तेरे पास आए हैं वे कहां हैं? उन को हमारे पास बाहर ले आ, कि हम उन से भोग करें। [6]तब लूत उनके पास द्वार के बाहर गया, और किवाड़ को अपने पीछे बन्द करके कहा, [7]हे मेरे भाइयों, ऐसी बुराई न करो। [8]सुनो, मेरी दो बेटियां हैं जिन्होंने अब तक पुरुष का मुंह नहीं देखा, इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊं, और तुम को जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उन से करो: पर इन पुरुषों से कुछ न करो; क्योंकि ये मेरी छत के तले आए हैं। [9]उन्होंने कहा, हट जा। फिर वे कहने लगे, तू एक परदेशी हो कर यहां रहने के लिये आया पर अब न्यायी भी बन बैठा है: सो अब हम उन से भी अधिक तेरे साथ बुराई करेंगे। और वे उस

पुरुष लूत को बहुत दबाने लगे, और किवाड़ तोड़ने के लिये निकट आए। 10तब उन पाहुनों ने हाथ बढ़ाकर, लूत को अपने पास घर में खींच लिया, और किवाड़ को बन्द कर दिया। 11और उन्होंने क्या छोटे, क्या बड़े, सब पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे अन्धा कर दिया, सो वे द्वार को टटोलते टटोलते थक गए।

आयत 1. यहाँ पर लेख **दो स्वर्गदूतों के सम्बन्ध में है जो सदोम में सांझ के समय आये थे**। जो शब्द यहाँ पर "स्वर्गदूत" מַלְאָכִים *(मलाकीम)* अनुवाद किया गया है उसका शाब्दिक अर्थ "संदेश वाहक" है। जो की मनुष्यों और दिव्य दोनों संदेश वाहकों के लिए प्रयोग किया जाता है। यह वही दूत थे जो यहोवा के साथ पिछले अध्याय में आये थे। जैसे जैसे वृतांत आगे बढ़ता है यह पहचान और भी स्पष्ट होती जाती है (देखें 19:10, 11)।

कहानीकार यह नहीं बताता कि वे 18 अध्याय में घटी घटनाओं के दिन ही सांझ को सदोम पहुंच गये थे या फिर अगले दिन के अंत पर। यदि यह उसी दिन की सांझ थी और सदोम मृत सागर के उत्तरी कोने पर स्थित रहा होगा तो माम्रे (हेब्रोन) से सदोम तक की दूरी बीस मील के लगभग रही होगी। यदि सदोम मृत सागर के दक्षिणी कोने पर स्थित रहा होगा, तो अब्राहम के दोनों अतिथियों को उनके अगले पड़ाव तक पहुँचने के लिए कम से कम 40 मील की यात्रा करनी थी। एक साधारण व्यक्ति कम दूरी चलकर तय नहीं कर सकता था, और निश्चित रूप से ज़्यादा दूरी दोपहर और साँझ के बीच में तय करना सम्भव नहीं था।दूरी के अलावा भी देखा जाए तो, यदि वे पिछले अध्याय में घटी घटनाओं के दिन पहुंचे होंगे तो उनकी यात्रा की गति इस विचार की ओर ले आती है कि वे अलौकिक शख्स थे।

साँझ के समय, जब स्वर्गदूत पहुंचे, तो उन्होंने **लूत को नगर के फाटक पर बैठा देखा**। यह दृश्य पिछले दृश्य की तुलना के विपरीत है, जहाँ पर अब्राहम "तम्बू के द्वार पर बैठा था" जब स्वर्गदूत आये (18:1)। यहाँ पर लिखी गयी भाषा पाठक को यह याद दिलाती है की लूत ने अपने पिछले खानाबदोश जीवन को एक शहरी जीवन शैली में बदल लिया था। अब्राहम से अलग होने के बाद, वह "अपने तम्बू को सदोम" तक ले गया (13:12)। कुछ समय बाद, उसने अपने आप को "सदोम में" (14:12) "एक घर में" (19:2) रहते हुए पाया।

यहाँ पर, वचन लूत के विषय में बताता है की वह "फाटक पर बैठा हुआ था।" चारदीवारी से घिरे नगर का फाटक उस नगर में दाखिले के लिए एक प्रमुख द्वार था। यह व्यापार करने का एक सार्वजनिक स्थान था (23:10), जहाँ पर मुकदमे सुने जाते थे और न्याय किया जाता था (34:20; रूत 4:1, 11; 2 शमूएल 15:2), और जहाँ पर लोग एक दूसरे से भेंट करने के लिए, गपशप के लिए (भजन 69:12), और नाना प्रकार के चिंताजनक विषयों को बांटने के लिए आते थे। हमें यह नहीं बताया गया कि क्यों लूत फाटक पर किस कर्ण से बैठा था, लेकिन निश्चित तौर से वह उस नगर का कोई सम्मानित राजनैतिक अगुवा नहीं था, जैसा कि कुछ सुझाते हैं। आयत 9 इस बात की ओर संकेत करता है की उस

नगर के लोग उसे "परदेशी" बोल-बोल कर अपमानित करते थे। यद्यपि यहाँ पर वचन यह नहीं बताता की लूत फाटक पर क्यों था, यह एक विचाराधीन विषय रहेगा।

जब **लूत ने दृष्टि की और देखा की दो पुरुष आये हैं, तब वह उनसे मिलने के लिए खड़ा हुआ और अपने मुंह को भूमि तक झुका कर प्रणाम किया।** लूत का यह कार्य सराहना के योग्य था क्योंकि उसने अजनबियों का इस तरह से सत्कार किया था, जबकि दूसरों ने ऐसा कुछ भी नहीं किया था। इसके साथ ही, वचन बताता है कि वहां पर वह ही अकेला था जिसने उनका स्वागत दंडवत कर के किया था, जैसा अब्राहम ने किया (18:2)।

आयत 2. जब लूत भूमि पर से खड़ा हुआ, तब उसने एक और अंतर दिखाया जब उसने उन पुरुषों को **"मेरे प्रभुओं"** कह कर पुकारा (देखें 18:3)। उसने आगे बढ़कर उन्हें **अपने घर आने का निमन्त्रण दिया**। इस अथिति सत्कार के माध्यम से, वे **अपने पांव भी धो सकते थे** (देखें 18:4) **और रात गुज़ार कर** अगली सुबह अपनी आगे की यात्रा जारी रख सकें।

यदि प्राचीन रीति रिवाज़ों के अनुसार कोई अपने अतिथियों को सोने के लिए जगह देता है तो, उसका इंकार करना मेज़बान का अपमान करना होता है। इसलिए, लूत को थोड़ा धक्का लगा जब उन अजनबियों ने पहली बार पूछे जाने पर मना कर दिया था, और वे नगर के चौक में रात गुज़ारने के लिए तैयार थे। यह चौक, फाटक के पास एक काफी बड़ा, खुला स्थान था (2 इतिहास 32:6; नहेम्याह 8:1; एस्तेर 4:6)। साधारण परिस्थितयों में, उस खुले सार्वजनिक स्थल में खतरा उठाने से किसी के घर में रात गुज़ारना ज़्यादा बेहतर था (न्यायियों 19:20-26)।

आयत 3. लूत अपने निमन्त्रण पर बना रहा, उसे डर था कि पता नहीं इन अजनबियों के साथ रात में क्या हो जाए, इसीलिए, उसने उनको बहुत दबाया की वे उसके आतिथ्य को स्वीकार कर लें और रात गुज़ारने के लिए उसके घर में रुकें। लूत के बार-बार आग्रह करने पर उन लोगों ने बाहर ठहरने के अपने वास्तविक योजना को त्याग दिया, और तब वे उसके घर में चले गये। **एक बार अंदर जाने के बाद, लूत ने उनके लिए दावत तैयार की और कुछ अखमीरी रोटी बनवाई।**

कुछ ऐसा अनुमान लगाते हैं कि यह एक प्रकार का हल्का नाश्ता था, जिसमें अखमीरी रोटी ही होती थी, यद्यपि यही एकमात्र भोजन वस्तु थी जिसका नाम दिया गया था। हालांकि, हो सकता है की कथाकार कुछ छोटे अखमीरी केक के बारे में बता रहा हो जो दावत מִשְׁתֶּה *(मिश्थेह)* के लिए इस्तेमाल किया जाता था। आम तौर पर, दावत शब्द का प्रयोग - विवाह समारोह की दावत के लिए (29:22), या किसी शाही भोज के लिए (1 शमूएल 25:36), या किसी राजा के लिए/के द्वारा, अपने मेहमानों को दिया जाने वाले भोज के लिए किया जाता था (एस्तेर 2:18; 5:14)।[1]

आयत 4. आम तौर पर, शाम के भोज के बाद, मेहमान सोने के लिए चले जाते थे। परन्तु इस अवसर पर, **उनके लेटने से पहले नगर के पुरुष** आकर उसके घर के बाहर शोर मचाने लगे। यह दूत अब समझने लगे कि सदोम के निवासी कैसे थे। उन्होंने घर **को घेर लिया, जवान और बूढ़ों सभी ने** ... नगर के हर कोने से। यहाँ पर प्रयोग की गयी भाषा पूरे नगर की दुष्टता पर ज़ोर देती है कि, निश्चित तौर पर, **सभी लोग** अपने ऊपर आने वाले न्याय के ही योग्य थे। ऐसा प्रतीत होता है, कि लूत के दामाद उस भीड़ में नहीं थे (देखें 19:14)।

आयत 5. इस मिली जुली भीड़ ने **लूत को पुकारा**, और आग्रह करने लगे कि जो पुरुष रात में उसके पास आये थे उनका पता बताये। फिर, वे मांग करने लगे कि उनको **बाहर ले कर आ** कि हम उनसे **भोग करें।** यहाँ पर अनुवाद किए गये शब्द "भोग करें" יָדַע *(यादा)* का अर्थ है "जानना" कुछ इस बात पर विवाद करते हैं कि सदोम के लोगों का कोई बुरा विचार नहीं था, वे तो साधारण रूप से जान पहचान करना चाहते थे। यह विचार LXX में प्रयोग *"यादा"* के अनुवाद συγγινώσκω *(सुनगिनोस्को)* की ओर ले जाता है, जिसका अर्थ "मिलना" या "बातचीत करना" है, जो आम शब्द γινώσκω *(गिनोस्को)* जिसका अर्थ "जानना" है,[2] उसके स्थान पर प्रयोग किया गया है। हालाँकि 19:5 और न्यायियों 19:22 में, शब्द *"यादा"* का अर्थ है "किसी व्यक्ति को शारीरिक रीति से जानना ... (समलैंगिग रीति से)"[3] अन्य विवरण "उनके साथ यौन क्रिया करें" (NIV; TEV; CEV; NLT) और "उनके साथ सम्भोग करें" (NJB; NEB; REB)।

यह दुष्टता इतनी अधिक फैलने लगी थी कि सदोम के सारे पुरुष, जवान और बूढ़े सभी, यह मांग करने लगे कि उन यात्रियों को बाहर लाया जाए ताकि वे उन के साथ "समलैंगिग सम्बन्ध" बना सकें।[4] यहाँ पर, पहली बार, सदोमियों की दुष्टता का रूप जो 13:13 में वर्णित किया गया था पूर्ण रूप से प्रकट किया गया है। परमेश्वर के लोगों को ऐसे कार्य न तो कभी करना चाहिए और न ही होने देने चाहिए (लैव्य. 18:22; 20:13; रोमि. 1:24-27, 32; 1 इति. 6:9-11; 1 तिमु. 1:8-11; यहोशु 7)। हो सकता है कि सदोम के लोग नाना प्रकार की दुष्टता और गुनाहों में संलग्न हों (यिर्म. 23:14; यहेज. 16:46-50), लेकिन पूरे समाज की विकृति खुल्लमखुल्ला रूप से होने और फैलती हुई समलैंगिगता के कारण ही परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़क उठा।

आयतें 6, 7. इस संघर्ष के समय में, **लूत** एक मध्यस्थ बना और उन के **सामने जाकर** एक बड़े साहस को प्रदर्शित किया। वचन में लिखा है की उसने अपने **पीछे द्वार बंद कर लिया**, और स्वयं उस भीड़ के सामने इस आशा से खड़ा हो गया कि वह अंदर बैठे अपने मेहमानों को बचा लेगा। फिर वह उनसे विनती करने लगा, **"हे मेरे भाइयों, ऐसी बुराई न करो।"** "मेरे भाइयों" का इब्रानी में प्रयोग किया गया शब्द אַחַי *(अखे)* है, लेकिन यहाँ पर इसका अर्थ यह नहीं है की वे वास्तविक तौर में सगे सम्बन्धी थे, बल्कि इसे "मेरे मित्रों" के रूप में समझा

जाना चाहिए (एन.आई.वी.), यह इस बात को दर्शाता है कि वह उनके साथ एकता के घनिष्ठ सम्बन्ध में जुटा था। इस घटना की विडम्बना यह है कि, कई वर्ष पूर्व, अब्राहम ने लूत को अपना "भाई" कहा था (13:8)। अपने चाचा से अलग होते हुए, जो परमेश्वर की आशीषों से भरा रहता था, इस भतीजे ने इन दुष्ट लोगों को अपना भाई बनाने का चुनाव किया जिनके ऊपर ईश्वरीय श्राप आने वाला था।

आयत 8. किस प्रकार से लूत का आत्मिक विवेक लम्बे समय तक इस भ्रष्ट समाज में रहते-रहते नष्ट हो चुका था इस बात का उदाहरण देते हुए, उसने इस भीड़ को अपनी **दोनों बेटियां** सौंप देने का निश्चय किया **जिन्होंने किसी भी पुरुष का मुंह तक नहीं देखा था**। "मुंह नहीं देखा" आयत 5 में प्रयोग किए गये इब्रानी शब्द *"यादा"* ("जानना") से आया है, लेकिन यहाँ पर यह स्त्री/पुरुष के सम्बन्ध के विषय में प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ यह है कि हालाँकि इस वचन में जिन दो जवान पुरुषों का वर्णन किया गया है उन्हें "लूत के दामाद" करके पुकारा गया है (19:14), लेकिन वे सिर्फ़ शपथ लिए हुए दामाद थे; जिनकी उसकी बेटियों के साथ मंगनी तो हुई थी, लेकिन विवाह अभी तक नहीं हुआ था (देखें मत्ती 1:18-25)।

अपनी कुंवारी बेटियों को ऐसे नीच झुण्ड के हवाले कर देने का प्रस्ताव समझ के परे था। उसने कहा की वे उन के साथ **जैसा मन करे वैसा बर्ताव कर सकते हैं**; बस वे उन दो पुरुषों को **छोड़ दें** जो उसके मेहमान हैं। कुछ लूत के इस व्यवहार को सही मानते हैं, क्योंकि प्राचीन नैतिक रिवाजो के अनुसार वह अपने मेहमानों की सुरक्षा के लिए जो उसे घर में आये थे, ज़िम्मेदार था; इसलिए, यदि उसकी सुरक्षा के अंतर्गत उनके साथ कुछ घटता है तो वह ज़िम्मेदार ठहराया जायेगा। ऐसा रिवाज निश्चित तौर से उस असमंजस को प्रकट नहीं कर सकता जिसका सामना लूत कर रहा था। उसने अपने मेज़बान होने के कर्तव्य को अपनी बेटियों की सुरक्षा से अधिक महत्वपूर्ण समझा। हो सकता है की, उसने याद किया हो कि किस तरह से मिस्र देश में अब्राहम ने अपने प्राणों की रक्षा के लिए अपनी पत्नी के मान को दांव पर लगा दिया था (देखें 12:10-20)। वह भी ठीक इसी तरह का कार्य अपने मेहमानों को बचाने के लिए और सदोम के लोगों की संतुष्टि के लिए करने की इच्छा रखता था।

स्पष्ट तौर से लूत भूल गया था कि यहोवा उसके चाचा के इस कार्य से खुश नहीं था और दूसरे पुरुष की पत्नी को अपने हरम में रखने के लिए फिरौन के घराने पर विपत्ति लाया। वह इस पिछली घटना के सबक को चूक गया, क्योंकि सब कुछ ठीक रीति से हो गया था: अब्राहम को अपनी पत्नी वापस मिल गयी थी, और फिरौन ने उसे काफी धन सम्पत्ति, मवेशी और गुलामों समेत दी। जब लूत अपनी दोनों कुंवारी बेटियों को सामूहिक बलात्कार और शारीरिक शोषण के लिए देने को तैयार हो जाता है तो यह उसके चरित्र के कुछ गंभीर कमियों को प्रकट करता है। सबसे पहले, उसकी नैतिक और आत्मिक प्राथमिकताएं उनके

विपरीत थी जो परमेश्वर एक पिता से अपनी बेटियों के लिए करने की अपेक्षा करता है। उसे अपनी बेटियों को प्यार और सुरक्षा देनी चाहिये थी, व्यक्तिगत तौर से इसकी कीमत चुकाने के बजाये। दूसरा, उसने सदोम के नीच लोगों को आदर देना अपनी बेटियों के मान और जीवन दोनों से ज़्यादा महत्व दिया था। इस प्रकार के यौन शोषण से गुज़री महिलाएं न तो मानसिक तौर से और न ही शारीरिक रूप से उबर सकती हैं (देखें न्यायियों 19:22-30)।

आयत 9. सदोम के पुरुषों ने बड़ी कठोरता से लूत को अलग **हट जाने के लिए कहा**। इससे बढ़कर उन्होंने यह कहकर उसका अपमान किया की वह एक परदेशी था जो उन के बीच में रहने के लिए आया, जिसका अर्थ था कि, उसके पास वहां का **नागरिक होने का अधिकार नहीं था**। वचन स्पष्ट तौर से बताता है कि, वह वहां पर "बसने" גּוּר *(गुर)* के लिए आया था। यही शब्द अब्राहम के लिए भी प्रयोग किया गया था जब वह थोड़े समय के लिए कनान देश के अकाल से बचने के लिए मिस्र को गया था (12:10)। परदेसियों का एक अनजान देश में ठहरना या तो सदा के लिए या फिर थोड़े समय के लिए हो सकता था, लेकिन हालाँकि वे वहां के निवासियों के सगे-सम्बन्धी नहीं होते, इसलिए उनकी सुरक्षा हमेशा उनके मेजबानों के अनुग्रह और सत्कार पर निर्भर थी। वे स्थानीय लोगों के सभी अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकते थे, और उनके पास सामाजिक मामलों में आवाज़ उठाने का भी कोई अधिकार नहीं था।[5] इसी कारण से, इस उद्दण्ड भीड़ ने लूत को स्वधर्मी परदेशी कहकर पुकारा जिसके पास **एक न्यायी बनकर** उनके व्यवहार का न्याय करने अधिकार नहीं था (देखें निर्गमन 2:14)।

यहाँ पर अनुवाद किया गया शब्द "न्यायी" שָׁפַט *(शपत)* है, लेकिन इसका इस सन्दर्भ में किसी भी मुकद्दमे के फैसले से लेना देना नहीं है। हो सकता है कि, सदोम में राहगीरों का समलैंगिग बलात्कार करने के विरुद्ध कोई कानून न हो। हालाँकि, *शपत* का दूसरा अर्थ "शासक" है; और प्राचीन संसार में, सदोम जैसे नगर का शासक (राजा) (देखें 14:2, 17) ही वहां के लोगों पर सबसे बड़ा न्यायी होता था। NJPSV इस वचन में "शपत" को एक अच्छे विचार से प्रस्तुत किया गया है, जिसके अनुसार सदोम के निवासी लूत के प्रति अपना रोष यह कह कर प्रकट करने लगे कि, ये तो "यहाँ का न्यायी भी बन बैठा है!"

सदोम के लोग इस बाहरी व्यक्ति से नाराज़ हो गये जो उनको यह बता रहा था कि उसकी बेटियों के साथ सम्भोग करना नैतिक तौर से उसके घर पर आये हुए पुरुषों के साथ सम्भोग करने से बेहतर है। इसलिए, वे उन से भी **ज़्यादा बुरा सलूक** [उसके] **साथ करने के लिए तैयार हो गये**, जोकि, लूत का उन दो पुरुषों से भी भयानक तरीके से यौन शोषण करने की योजना थी। इस भयावह क्षण में, वे पुरुष **लूत को दबाने लगे और इतनी ताकत से कि घर का द्वार टूटा ही जाता था**।

आयत 10. जैसे ही भीड़ लूत की तरफ आगे बढ़ने लगी और दरवाज़ा टूटने ही वाला था, उन **पुरुषों** (स्वर्गदूतों) ने लूत को छुड़ाने के लिए **अपना हाथ**

बढ़ाया। उन्होंने तुरंत उसे बचाने के लिए घर के अंदर खींचा और **द्वार बंद कर दिया**।

आयत 11. तब उन्होंने उन पुरुषों पर वार किया जो द्वार तोड़ने की कोशिश कर रहे थे - **छोटे-बड़े सभी को - अँधा कर दिया**। "अंधेपन" के लिए जिस शब्द का यहाँ पर प्रयोग किया गया है वह साधारण इब्रानी शब्द עִוֵּר *(इव्वर)* नहीं है लेकिन סַנְוֵרִים *(संवेरिम)* है, जो पुराने नियम के इसी के जैसे सन्दर्भ (2 राजा 6:18) में पाया जाता है। "यह अक्कदी मूल के जैसे शब्द पर आधारित शब्द है"[6] और ऐसा प्रतीत होता है की यह एक अस्थायी अँधा कर देने वाली रौशनी के बारे में है जो चमकती है और पीड़ित व्यक्ति को असमंजस में डाल देती है ताकि वे साधारण रूप से कार्य न कर पायें। वे अंधे लोग **द्वार को ढूंढते ढूंढते** यहाँ वहां घूमते रहे लेकिन सफल न हो पाए। विपरीततया है कि सदोम के यह पुरुष जो लूत के घर में आये पुरुषों को जानने की इच्छा रखते थे अब वे यह भी नहीं जानते की द्वार कैसे ढूंढे ताकि अंदर प्रवेश कर सकें!

यहोवा की दया का प्रदर्शन: लूत का छुटकारा (19:12-22)

लूत के दामादों को उसकी चेतावनी (19:12-14)

[12]फिर उन पाहुनों ने लूत से पूछा, यहां तेरे और कौन कौन हैं? दामाद, बेटे, बेटियां, वा नगर में तेरा जो कोई हो, उन सभों को ले कर इस स्थान से निकल जा। [13]क्योंकि हम यह स्थान नाश करने पर हैं, इसलिये कि उसकी चिल्लाहट यहोवा के सम्मुख बढ़ गई है; और यहोवा ने हमें इसका सत्यनाश करने के लिये भेज दिया है। [14]तब लूत ने निकल कर अपने दामादों को, जिनके साथ उसकी बेटियों की सगाई हो गई थी, समझा के कहा, उठो, इस स्थान से निकल चलो: क्योंकि यहोवा इस नगर को नाश किया चाहता है। पर वह अपने दामादों की दृष्टि में ठट्ठा करने हारा सा जान पड़ा।

आयतें 12, 13. स्वर्गदूत पूछताछ करने लगे की क्या लूत के अन्य सम्बन्धी भी हैं - **जैसे दामाद, बेटे, बेटियाँ, या नगर में अन्य परिजन**। बाहरी स्तर पर, आश्चर्य की बात लगती है कि इन दिव्य प्राणियों को लूत के परिवार के लोगों की संख्या और लिंग नहीं पता थी। या तो यहोवा ने इस सूचना को उन पर प्रकट नहीं की, या फिर उन्होंने अपनी अलौकिक सामर्थ्य का प्रयोग करके इसका पता नहीं लगाया।

जैसा कि पहले सूचित किया गया है, आधुनिक पश्चिमी संस्कृति में "दामाद" शब्द इन युवकों का सटीक विवरण देने वाला शब्द नहीं है, क्योंकि वचन बताता है की लूत की दोनों बेटियाँ कुवांरी थी। प्राचीन संसार में, जब जवान लोगों की मंगनी होती थी, तो लोग उन्हें पति और पत्नी की तरह बुलाते थे जबकि उनके बीच में सम्बन्ध नहीं बनता था। मंगनी इतनी आसानी से नहीं तोड़ी जा सकती थी। इसे एक घनिष्ठ सम्बन्ध माना जाता था; और यदि "पति" अपने वैवाहिक

सम्बन्ध को घनिष्ठ न बनाये, तो उसे अपनी "पत्नी" को तलाक देना होता है (देखें मत्ती 1:18-25)। जबकि आज कई जोड़े बिना सामाजिक शर्म के या कानून का उल्लंघन करके एक साथ ऐसे रहते हैं जैसे कि वे विवाहित हो, सगाई, विवाह, और यौन सम्बन्धों के प्रति इस प्रकार का बेपरवाह रवैया बाइबलीय काल में सम्भव नहीं था। न ही यह पश्चिमी समाज में आधुनिक समय आने तक सम्भव था, और इस तरह के कार्यों को परमेश्वर कभी भी स्वीकार नहीं करता।

यदि लूत सोचता कि उसे अपने घर में सुरक्षा मिल सकती है, तो वह दुखद रुप से गलत होता। दूतों ने उसे विलम्ब किये बिना चेतावनी दी की यदि उसके और भी सम्बन्धी हो तो उन्हें लेकर नगर से बाहर चले जाएँ क्योंकि वे **इस नगर को नाश करने पर हैं**। फिर स्वर्गदूतों ने सदोम के नाश किये जाने का कारण भी बताया: **इसलिये कि उसकी चिल्लाहट यहोवा के सम्मुख बढ़ गई है**; और **यहोवा ने अपने दूतों को इसका सत्यानाश करने के लिये भेज दिया है**।

आयत 14. लूत ने अपना घर छोड़ने और अपने दामादों से, जिनके साथ **उसकी बेटियों का विवाह तय हुआ था**, उनसे बात करने के द्वारा प्रतिक्रिया दी। उसने उन्हें भी वहां से तुरंत निकलने के लिए कहा, **क्योंकि यहोवा उस जगह को नाश करने जा रहा है**। उसने उन युवकों को उस रात घटने वाली सभी घटनाएं भी बताई होंगी: दो अजनबियों का आना, क्रोधित भीड़, उन आगन्तुकों के तथा उसके विरुद्ध मिलने वाली धमकियां, और यह तथ्य की परमेश्वर अब और ज़्यादा सदोम के नागरिकों का ऐसा दुष्ट व्यवहार सहन नहीं कर सकता।

लूत की कहानी सुनकर भी उसके **दामादों** पर कोई असर नहीं हुआ और वे सोचने लगे की वह मज़ाक कर रहा है। यह सब उनको कुछ ज़्यादा ही अविश्वसनीय लगा और उन्हों ने इसे मूर्खता समझ कर अनदेखा कर दिया। यह घटना इस बात को दिखाती है कि लूत एक परिवार का मुखिया होने के बावजूद कितना अयोग्य था और उसके दामादों की दृष्टि में उसका कोई मान नहीं था।

यदि वह उन दोनों अजनबियों को बचाने के लिए अपनी बेटियों को खतरे में डालने की अपनी इच्छा के बारे में उन्हें बताता, तो यह उनकी दृष्टि में उसके प्रति जो थोड़ा बहुत आदर था वह भी खत्म हो जाता। कोई भी कारण रहा हो, उन्होंने उसकी चेतावनी को अनसुना कर दिया और नगर को छोड़ने की कोई तैयारी नहीं की।

इस वृतांत में पहले, लेखक इस बात को प्रकट करता है की लूत के पास काफी संख्या में "पशु और मवेशी और तम्बू" (13:5), बहुत अधिक "सम्पत्ति" (13:6), और कई "चरवाहे" थे (13:7, 8); फिर भी, इस विपत्ति के समय में, उसने इन आदमियों और उनके परिवारों के जीवन की कोई भी चिंता नहीं दिखाई। उसने न तो स्वर्गदूतों को इनके बारे में बताया और न ही उन्हें इस आने वाले विनाश के विषय में चिताया ताकि वे उस से बच कर भाग सकें। क्या यह हो सकता है कि लूत ने अपने सेवकों से अभी अपने विश्वास के बारे में न बांटा हो या उन पर यह प्रकट न किया हो कि कैसे परमेश्वर ने उसके चाचा अब्राहम के

कारण उसको इतनी अधिकता से आशीषित किया? क्या वे अपने स्वामी के प्रति आदर खो चुके थे क्योंकि उसने उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया और उनको अनदेखा किया? क्या उस नगर में रहने की उसकी इच्छा, कम से कम उनके मन में, उनको यह संकेत दे रहे थे कि वह सदोम की दुष्टता के बहकावे में आ गया था? कोई भी कारण हो, लूत को यहाँ पर एक अभागे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसका अपने परिवार पर, दामादों पर, या सेवकों पर धार्मिकता के विषय में बहुत थोड़ा प्रभाव था।

लूत का सोआर को भागना (19:15-22)

15जब पौ फटने लगी, तब दूतों ने लूत से फुर्ती कराई और कहा, कि उठ, अपनी पत्नी और दोनों बेटियों को जो यहां हैं ले जा: नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म में भस्म हो जाएगा। 16पर वह विलम्ब करता रहा, इस से उन पुरुषों ने उसका और उसकी पत्नी, और दोनों बेटियों का हाथ पकड़ लिया; क्योंकि यहोवा की दया उस पर थी: और उसको निकाल कर नगर के बाहर कर दिया। 17और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने उन को बाहर निकाला, तब उसने कहा अपना प्राण ले कर भाग जा; पीछे की और न ताकना, और तराई भर में न ठहरना; उस पहाड़ पर भाग जाना, नहीं तो तू भी भस्म हो जाएगा। 18लूत ने उन से कहा, हे प्रभु, ऐसा न कर: 19देख, तेरे दास पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हुई है, और तू ने इस में बड़ी कृपा दिखाई, कि मेरे प्राण को बचाया है; पर मैं पहाड़ पर भाग नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो, कि कोई विपत्ति मुझ पर आ पड़े, और मैं मर जाऊं: 20देख, वह नगर ऐसा निकट है कि मैं वहां भाग सकता हूं, और वह छोटा भी है: मुझे वहीं भाग जाने दे, क्या वह छोटा नहीं है? और मेरा प्राण बच जाएगा। 21उसने उससे कहा, देख, मैं ने इस विषय में भी तेरी बिनती अंगीकार की है, कि जिस नगर की चर्चा तू ने की है, उसको मैं नाश न करूंगा। 22फुर्ती से वहां भाग जा; क्योंकि जब तक तू वहां न पहुंचे तब तक मैं कुछ न कर सकूंगा। इसी कारण उस नगर का नाम सोअर पड़ा।

आयत 15. जब पौ फटने लगी, **तब दूतों ने लूत से फुर्ती करके** [उसकी] **पत्नी और** [उसकी] **दोनों बेटियों को लेकर उस नगर से भाग जाने के लिए** कहा ताकि वे उस आने **वाले दंड** עָוֹן *(अवोन)* में न फंस जाए। इब्रानी शब्द "अवोन" को "पाप," "गलती," या "आत्मग्लानि" भी अनुवाद किया जा सकता है; इसलिए, इसके कारण और प्रभाव से सम्बन्धित दो तरह के अर्थ निकल सकते है, जो सन्दर्भ पर आधारित होते हैं। इस वचन में, यह पापमय कार्य नहीं थे जिनके बारे में बताया गया है, लेकिन सदोम के बुरे कार्यों का परिणाम था - परमेश्वर द्वारा दिया गया दण्ड।[7] दूत लूत को चेतावनी दे रहे थे कि सदोम की दुष्टता का घड़ा अब भर चुका है, और यहोवा अब किसी भी नगर या क्षेत्र को नहीं छोड़ेगा जहाँ की जनसंख्या यह सोचे कि वे पाप कर-कर के छुटकारा प्राप्त करती रहे। सदोम के पाप उस दुष्टता के प्रतिनिधि थे जो यरदन की पूरी घाटी में प्रचलित थी। विनाश

उस पूरे क्षेत्र पर आ रहा था क्योंकि यहाँ के लोगों दुष्टतापूर्ण और घृणित कार्यों में लिप्त थे और जिनसे वे पीछे हटना नहीं चाहते थे।

आयत 16. लूत नगर को छोड़ने के लिए **इच्छुक नहीं था**। दूतों ने उसका हाथ, और तो और **उसकी पत्नी और दोनों बेटियों का हाथ पकड़ लिया**, औए ऐसा प्रतीत होता है कि इन दिव्य दूतों ने सदोम से उन्हें खींच कर बाहर निकाला। लूत और उसके परिवार को आने वाले विनाश की चेतावनी के प्रति तुरंत प्रतिक्रिया करनी थी, लेकिन किसी कारण से वे देर करते रहे। हालाँकि उन्होंने उस नाश होने वाले नगर की खुले रूप से की जानेवाली दुष्टता में भाग तो नहीं लिया था, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि सदोम उनके लिए एक इतने घातक आकर्षण का स्थान बना हुआ था कि दूतों को वास्तव में उन्हें वहां से बहर धकेलना पडा। बाईबलीय कथाकार इस बात का विवरण देने का प्रयास नहीं करता है कि क्यों लूत और उसके परिवार के लिए एक सुरक्षित स्थान पर भाग जाना इतना कठिन कार्य था। उसने साधारण शब्दों में कहा कि **यहोवा की दया उस पर थी** इसीलिए **दूतों ने उसे नगर के बाहर निकाल दिया**।

आयत 17. जब स्वर्गदूत लूत और उसके परिवार को नगर से बाहर कर चुके, तो उनमें से **एक** ने कहा, **"अपना प्राण ले कर भाग जा।"** आयत 17 से 22 तक यह शब्द "भाग जा" (बच निकलना; NIV); पांच बार प्रयोग हुआ है। यह परिवार अभी तक बिना विलम्ब किये सदोम छोड़ने की आवश्यकता से पूरी रीति से निश्चिन्त नहीं था। लूत के परिवार के बीच में, जो बार-बार टालने की कोशिश कर रहा था, और दूतों के बीच में, जो बार-बार उन्हें याद दिला रहे थे कि परिस्थिति गम्भीर है, इच्छाओं का एक युद्ध चल रहा था। और तो और सदोम के इन निवासियों को बताया गया कि न तो रुकना और न ही पीछे मुड़कर **देखना**। न ही उन्हें घाटी כִּכָּר *(किकार)* या "तराई" **में कहीं पर रुकने** की आज्ञा थी (NIV; NRSV; NEB)।

13:10 में, इस क्षेत्र को "यरदन की तराई" कहा गया है। व्यवस्थाविवरण 34:3 के अनुसार, यह क्षेत्र यरीहो से सोअर तक, मृत सागर के दक्षिण तक फैला हुआ था। स्वर्गदूतों की चेतावनी बताती है की सदोम पर आने वाला विनाश बाकि नगरों तक भी फैलेगा। इसीलिए, नगर के बाहर के क्षेत्र में भी रुकना सुरक्षित नहीं था। इसके बजाए, उन्हें पूर्व में मोआब के पहाड़ों की तरफ भाग जाना चाहिए (जो मृत सागर से लगभग तीन हजार फीट ऊँचे थे), नहीं तो वे नाश हो जायेंगे।

आयतें 18, 19. लूत उस क्षेत्र से पूरी तरह से जाने के विचार से फिर से पीछे हटने लगा। उसने दूतों की आज्ञा को "हे प्रभु, ऐसा न कर" कहकर टाल दिया। फिर उसने उनकी आज्ञा के विपरीत प्रस्ताव रखा, जो इस तथ्य के प्रकाश में चौंका देने वाला था कि स्वर्गदूत उसके प्राण बचाने की कोशिश कर रहे थे। लूत इन दिव्य निर्देशों का प्रतिरोध करता रहा। उसने उनका आभार प्रकट किया क्योंकि उसने उनकी दृष्टि में दया חֵן *(खेन)* या "अनुग्रह" **पाया** था[8] (देखें 6:8;

निर्ग. 33:12)। वह अपना जीवन बचाए जाने के लिए **उनकी करुणा** (חֶסֶד, *चेसड*, "भलाई, दया[9]") के प्रति भी आभारी था। ठीक इसी समय पर, उसने यह कहकर दूतों के प्रस्ताव को ठुकरा दिया कि पहाड़ तो अभी बहुत दूर हैं। उसे भय था कि उन **पहाड़ो** पर भागना उसके लिए असम्भव होगा क्योंकि **विनाश** आरम्भ हो जायेगा और परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु हो जाएगी।

आयत 20. जब वे **पास ही के छोटे कस्बे** के पास पहुंचे जो छिपने के लिए काफी था, उसने वहां जाने की अनुमति मांगी ताकि उसका **जीवन बच जाए**। सदोम के विनाश के साथ, लूत भागकर जाने के रास्ते के विषय में दूतों के साथ वाद विवाद करने लगा। सदोम छोड़कर जाने से आनाकानी करने के बाद, वह कहने लगा कि अब सुरक्षा के लिए सुदूर पहाड़ों पर जाने के लिए उसके पास समय नहीं है।

आयत 21. अब्राहम के विद्रोही भतीजे को बचाना अत्यधिक कठिन था। उसके आज्ञा मानने में आनाकानी करने और दूतों की चेतावनी के लिए अनिच्छा दिखाने के बाद, अनुग्रह के द्वारा, दूत उसकी विनती मानने के लिए तैयार हो गये। लूत के पहाड़ पर भाग जाने की आज्ञा स्थगित करने परमेश्वर के प्रतिनिधि ने यरदन की घाटी के सभी नगरों का नाश करने की योजना को बदल दिया। दूत ने वायदा किया कि वह उस **छोटे कस्बे** को **नाश** नहीं करेगा जिसमें लूत शरण लेगा।

इस घटना में लूत की याचना अध्याय 18 में अब्राहम की याचना के जैसी लगती है। इससे पहले के वृतांत में कुलपिता की विनती के प्रत्युत्तर में, परमेश्वर सदोम के निवासियों को नाश न करने के लिए मान गया था यदि वहां पर धर्मी लोग एक पर्याप्त संख्या में होते। इस वर्णन में, लूत यहोवा के दूतों को मनाने की कोशिश करता है कि वे यरदन घाटी के सभी नगरों के विरुद्ध अपने विनाशकारी कार्य को वापस ले ले ताकि उसे जल्दबाज़ी में पहाड़ों पर चढ़कर शरण न लेनी पड़े। दूत लूत को यह बताने की कोशिश कर रहे होंगे की यदि वह बिना किसी वाद विवाद के और विलम्ब के उनकी आज्ञा को मान लेता तो उसके पास उस पहाड़ पर भाग जाने के लिए पर्याप्त समय था।

आयत 22. यहोवा की दया जयवंत हुई, और इस कस्बे के लोग ईश्वरीय न्याय से बच गये (देखें याकूब 2:13)। एक दूत ने यह कहकर लूत को **फुर्ती** कर के वहां **भाग** जाने के लिए कहा; **"क्योंकि जब तक तू वहां न पहुंचे तब तक मैं कुछ न कर सकूंगा।"**

वचन आगे यह बताता है की, **इसी कारण उस नगर का नाम सोअर पड़ा**। एन.आई.वी. में इसे एक प्रारम्भिक कथन के रूप में दिया गया है: "(इसी कारण उस नगर का नाम सोअर पड़ा)।" यह नाम एक प्रकार से शब्दों का उलटफेर ही है, क्योंकि "सोअर" का अर्थ "छोटा" होता है (देखें 19:20)। यह स्थान, मृत सागर के दक्षिण में स्थित है, और मोआब के पर्वतीय पठार के मार्ग पर है।

यहोवा के न्याय का पूरा होना (19:23-29)

[23]लूत के सोअर के निकट पहुंचते ही सूर्य पृथ्वी पर उदय हुआ। [24]तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई; [25]और उन नगरों को और सम्पूर्ण तराई को, और नगरों को और उस सम्पूर्ण तराई को, और नगरों के सब निवासियों, भूमि की सारी उपज समेत नाश कर दिया। [26]लूत की पत्नी ने जो उसके पीछे थी दृष्टि फेर के पीछे की ओर देखा, और वह नमक का खम्भा बन गई। [27]भोर को इब्राहीम उठ कर उस स्थान को गया, जहां वह यहोवा के सम्मुख खड़ा था; [28]और सदोम, और अमोरा, और उस तराई के सारे देश की ओर आंख उठा कर क्या देखा, कि उस देश में से धधकती हुई भट्टी का सा धुआं उठ रहा है। [29]और ऐसा हुआ, कि जब परमेश्वर ने उस तराई के नगरों को, जिन में लूत रहता था, उलट पुलट कर नाश किया, तब उसने इब्राहीम को याद करके लूत को उस घटना से बचा लिया।

आयत 23. यह आयत एक अवस्थान्तर का कार्य करती है। यह पिछले पद के अंत के रूप में समझी जा सकती है (19:15-22), जो **लूत** के सुरक्षित **सोअर** पहुँचने की सूचना देती है (देखें RSV; NRSV)। दूसरे पक्ष में, यह इस भाग के आरम्भ के रुप में समझी जा सकती है (19:23-29), सदोम और अमोरा के विनाश के समय को दर्शाने के कार्य के रूप में (**जब सूर्य पृथ्वी पर उदय हुआ**)।[10] ज़्यादातर संस्करण, NASB को मिलाकर, बाद के विचार का ही पक्ष लेते हैं।

आयत 24. परमेश्वर ने स्वर्गदूतों द्वारा लूत को किये गये वायदे का मान रखा, और दुष्टता से भरे नगरों का विनाश तब तक शुरू नहीं किया जब तक अब्राहम का भतीजा सोअर को सुरक्षित न पहुँच जाये। **तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई।** हालाँकि "आग और गंधक" גָּפְרִית וָאֵשׁ *(गप्रित वा एश)* का दोहराया जाना काफी प्रचलित है, लेकिन इब्रानी भाषा का बेहतर अनुवाद "जलता हुआ गंधक" (NIV) या गंधक मिली आग है (NJPSV)।

परमेश्वर ने यह कैसे किया होगा? एक तर्कसंगत सिद्धांत यह है कि, उसने एक शक्तिशाली भूकम्प का प्रयोग किया जिससे गर्म गैस, गंधक,और राल (अस्फाल्ट या टार; देखें 14:10) दरारों में से गति के साथ हवा में आने लगी जो हिलती हुई भूमि से उत्पन्न हुई थी।[11] उसने उन गैसों को जलाने के लिए बिजलियाँ और राल बरसाई ताकि पूरी घाटी आग के प्रलय से भर जाए।[12]

आयत 25. हो सकता है कि यहोवा ने कुछ दूसरे प्राकृतिक साधनों का प्रयोग किया हो, लेकिन यह उसकी दिव्य शक्ति थी कि उसने सदोम और अमोरा समेत, **पूरी घाटी**, और **उसमें रहने वाले सभी प्राणियों** को **नाश** कर दिया। जो वनस्पति उस **भूमि पर उगी** थी उसे भी इस अग्नि में राख कर दिया।

आयत 26. उस क्षेत्र के सभी निवासियों में से, इस तबाही से बचकर भागने वाले सिर्फ़ लूत और उसकी बेटियां ही थे, जो सोअर के छोटे से नगर में थे। लूत

की **पत्नी** नाश हो गई क्योंकि भागते समय वह उसके पीछे थी और आयत 17 में दिए गये निर्देश के विरुद्ध उसने **पीछे मुडकर देखने** की घातक गलती की। अपने घर को आखिरी बार देखने के लिए रूककर वह सोअर की सुरक्षा में पहुँचने को असफल हुई और **नमक का खम्बा बन कर** नाश हो गयी। यह वर्णन, जो "फैसले के संदर्भ में" दिखाई देता है, "एक ही दृश्य में पीछे हटने वालों के जीवन के न्याय की झलक दिखला देता है (इब्रा. 10:38, 39; लूका 17:31-33)।"[13]

कुछ ने अनुमान लगाया है कि लूत की पत्नी आग के विस्फोट में मारी गयी और उस मलबे में दब गयी जो उसके उपर बरस रहा था, जिसमें नमक शामिल था, इस प्रकार का नमक मृत सागर के दक्षिणी पश्चिमी छोर के पास एक बड़े क्षेत्र में पाया जाता है। एक नमक पहाड़ वहाँ पर स्थित है, जो नौ मील लंबा और एक मील चौड़ा है। यह सदोम पर्वत कहलाता है, और यह नमक के गुंबदों से बना है - मुख्य रूप से सोडियम क्लोराइड (खाने वाला नमक), जिसमे धूलि भी मिश्रित है - जिसे पृथ्वी पर से हज़ारों वर्ष पूर्व हटाया गया था। यह कुछ नमक के खंभों और अजीब संरचनाओं से बना है, और इनमें से कई खम्भों को पर्यवेक्षक लूत की पत्नी के रूप में देखते है।

एक अपोक्रिफल पुस्तक, विस्डम ऑफ़ सोलोमन (प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व से) में, लेखक उस तबाही का वर्णन करता है जिसमे लूत के समय में मृत सागर का पूरा क्षेत्र "राख से निर्मित बंजर भूमि" में बदल गया था। फिर वह "नमक के एक स्तंभ को अविश्वासी आत्मा के लिए एक स्मारक" के रूप में स्थापित बताता है।[14] इसी तरह, जोसिफस ने, पहली शताब्दी ईस्वी में "नमक का खम्भा" देखने का दावा किया था, और उसने बताया था कि यह अभी भी वहाँ पर पर्यटकों के देखने के लिए स्थित है।[15] हालांकि पर्यटक जब आज सदोम पर्वत की यात्रा के लिए जाते हैं तो वे कुछ पेचीदा नमक के खंभों और संरचनाओं का निरीक्षण कर सकते हैं, लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि इनमें से एक लूत की पत्नी हो सकती है।

आयत 27. इस बिंदु पर, **अब्राहम** इस वृतांत में फिर से प्रकट होता है। वह **तड़के सुबह उठा** और तीन मिल की यात्रा करके उसी जगह पहुंचा **जहाँ पर वह यहोवा के सामने खड़ा था** (18:22)।

आयत 28. और तब उसने सदोम, और अमोरा, और यरदन की **तराई के सारे देश** की ओर **आंख उठा कर देखा**, कि उस **देश** में से धधकती हुई भट्टी **का सा धुआं** उठ रहा है। उसने देखा की **बहुत सारा धुआं** उस बर्बाद भूमि से ऊपर उठ रहा था। "भट्टी" כִּבְשָׁן *(किबशन)* के लिए प्रयोग किया गया शब्द, एक भट्ठे के लिए प्रयोग किया गया है जो बर्तन बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है[16] इस बंजर भूमि को देखकर, हो सकता है की अब्राहम ने अनुमान लगाया हो की लूत और उसके परिवार के साथ-साथ क्षेत्र की पूरी आबादी, भी आग में भस्म कर दी गयी, भले ही उसने यहोवा से उसे बचाने के लिए बिनती की थी। जबकि बाइबल

लेखक लूत के सुरक्षित होने के विषय में जानता था, लेकिन वचन हमें नहीं बताता कि, अब्राहम जानता था या नहीं कि उसका भतीजा सुरक्षित था।

आयत 29. यह भाग इस कहानी के सारांश से खत्म होता है जो कथाकार पहले ही बता चुका है। यह उन प्रश्नों का उत्तर दे रहा था जो अब्राहम ने 18:23-33 में पूछे थे। धर्मी जन के विषय में कुलपिता की मध्यस्थता उपयोगी थी। वचन बताता है कि **जब परमेश्वर ने घाटी के नगरों को नाश किया, तब उसने अब्राहम को याद किया, और लूत को उस विनाश से बचा लिया। अब्राहम की याद में परमेश्वर ने लूत को भी याद रखा**। यह भतीजा और उसकी बेटियाँ इसलिए बचाई गयी क्योंकि कुलपिता ने यहोवा से धर्मी जन को बचाने के लिये याचना की थी। हालाँकि, यह लूत की धार्मिकता के कारण नहीं हुआ था, लेकिन अब्राहम की धार्मिकता के कारण हुआ था, कि परमेश्वर ने लूत और उसके परिवार पर अनुग्रह किया। उनके लिए मध्यस्थता करने के द्वारा, अब्राहम ने उन्हें अवसर दिया की वे उन **नगरों** के "विनाश" से बचाए जाएँ।

आयत 29 यह भी बताता है कि परमेश्वर ने कुलपिता पर प्रकट किया कि उसका भतीजा सुरक्षित था, ताकि उसका बेचैन हृदय शांत हो जाए। वचन स्पष्ट रूप से यह नहीं बताता है, और 19:30-38 में उसकी बेटियों के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने के बाद, लूत इस कहानी में से गायब हो गया और उसका स्मरण उत्पत्ति में दुबारा कहीं भी नहीं दिया गया है।

लूत का अपनी बेटियों के साथ कौटुम्बिक व्यभिचार (19:30-38)

30और लूत ने सोअर को छोड़ दिया और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों समेत रहने लगा; क्योंकि वह सोअर में रहने से डरता था: इसलिये वह और उसकी दोनों बेटियां वहां एक गुफा में रहने लगे। 31तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, हमारा पिता बूढ़ा है, और पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए: 32सो आ, हम अपने पिता को दाखमधु पिला कर, उसके साथ सोएं, जिस से कि हम अपने पिता के वंश को बचाए रखें। 33सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया, तब बड़ी बेटी जा कर अपने पिता के पास लेट गई; पर उसने न जाना, कि वह कब लेटी और कब उठ गई। 34और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा, देख, कल रात को मैं अपने पिता के साथ सोई: सो आज भी रात को हम उसको दाखमधु पिलाएं; तब तू जा कर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें। 35सो उन्होंने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया और छोटी बेटी जा कर उसके पास लेट गई: पर उसको उसके भी सोने और उठने के समय का ज्ञान न था। 36इस प्रकार से लूत की दोनो बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुई। 37और बड़ी एक पुत्र जनी और उसका नाम मोआब रखा: वह मोआब नाम जाति का जो आज तक है मूल पिता हुआ। 38और छोटी भी एक पुत्र जनी और उसका नाम बेनम्मी रखा; वह अम्मोन वंशियों का जो आज तक हैं मूल

पिता हुआ।

आयत 30. सदोम और अमोरा के विनाश के बाद **लूत** और उसके परिवार के बचे सदस्य - **उसकी दो बेटियों** - को नया जीवन प्रारंभ करना था। परमेश्वर ने लूत के निवेदन पर **सोअर** नामक नगर को नाश नहीं किया जहाँ वे रह सकते थे। परंतु, स्पष्ट रूप से यह ईश्वरीय योजना उनके लिए समस्या बन कर खड़ी हो गई क्योंकि उन्होंने अपनी योजना बना ली थी।

सदोम छोड़ने के बाद जब लूत ने स्वर्गदूतों से सुरक्षा के लिए सोअर जाने की अनुमति मांगी, तो उसने वही करने का निर्णय लिया जो उन्होंने मूलतः उसे करने का निर्देश दिया था। कुछ अवर्णनीय कारणों से उसने अपने योजना में परिवर्तन किया और **पहाड़ों** पर बसेरा के लिए चला गया। मूलपाठ यह नहीं बताता है कि वह **सोअर में ठहरने** से क्यों भयभीत हुआ और क्यों वह गुफा में एकांतवाश के लिए अपने **दोनों बेटियों** के साथ चला गया। क्या सोअर के लोगों ने यह सोचकर कि वे (लूत और उसकी बेटियाँ) शापित हैं जिसके कारण उस क्षेत्र का जहाँ वह रहते थे, नाश किया गया, इसलिए उसे और उसकी बेटियों को त्यागा? क्या लूत इस बात से भयभीत था कि सोअर के लोग उसको नुकसान पहुँचाएंगे या फिर यहोवा का क्रोध उस नगर पर भी भड़क सकता है?

वचन इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं देता है; परंतु ऐसा जान पड़ता है कि लूत लगातार गलत निर्णय लेता गया। पूर्व की ओर पलायन करके विरान गुफा में जीवन बिताना, जहाँ जिंदा रहना एक चुनौती है, के बजाय उसने अपने आपको नम्र करके पश्चिम की ओर जाकर अब्राहम के पास शरण क्यों नहीं लिया? निश्चय वह जानता था कि उसका चाचा, वर्षों एक दूसरे से दूर रहने के बाद उसका स्वागत करेगा। यदि लूत ने यह सोचा भी होगा कि अब तक तो उसकी मृत्यु हो चुकी होगी तो भी लूत को उन भलाइयों को स्मरण करना चाहिए था जो कुलपति ने उस पर और सदोम के लोगों पर दिखाई थी जब उसने उन्हें पूर्व के चार राजाओं से उन्हें छुड़ाया था (देखें अध्याय 14)। निश्चय, अब्राहम के लोग, उसके संस्मरणों और उसके भतीजे के प्रति उसके स्नेह का आदर करके, उन्हें ठहरने के लिए स्थान अवश्य देते। लूत के निर्णय को जिस किसी भी बात ने तय किया हो, वह एक दर्दनाक कथा है जो यर्दन घाटी के पूर्व, एक गुफा में पुनः आरंभ होती है।

आयत 31. इससे पहले कि प्रथम बेटी ने दूसरी बेटी से यह कहा कि **"हमारा पिता बूढ़ा है, और पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए"** उस घड़ी तक, पाठ यह नहीं बताता है कि कितने समय तक लूत और उसके बेटियों ने गुफा में समय बिताया होगा। इस अवतरण में "पृथ्वी" शब्द का अक्सर गलत अनुवाद किया जाता है कि लूत के बेटियों ने सोचा कि पूरे संसार में उसके पिता को छोड़कर और कोई दूसरा जीवित पुरुष नहीं बचा है। इस अनुवाद के अनुसार लूत की बेटियों के लिए कोई और रास्ता

नहीं बचा था कि वे अपने लिए पति करें कि फिर से पृथ्वी को मानवजाति से भरे।

हाँ, यह सत्य है कि इब्रानी शब्द (אֶרֶץ, *'एरेत्स)* का अर्थ सारी पृथ्वी भी हो सकता है लेकिन आयत 31 में इसका बेहतर अर्थ "इस धरती" पर अर्थात "इस क्षेत्र" पर या "इसके चारों ओर" (NIV) के क्षेत्र अधिक उपयुक्त होगा। इस शब्द का तात्पर्य पूरी पृथ्वी से नहीं हो सकता है क्योंकि सोअर के लोग अभी तक जिंदा थे। इसके साथ ही, स्वर्गदूतों ने सदोम और यर्दन की सीमित घाटी के नगरों को ही नाश किया था तो लूत के बेटियों को इसका *यह* अनुमान नहीं लगाना चाहिए था कि संपूर्ण पृथ्वी की संपूर्ण जनसंख्या मिटा दी गई है।

आयत 32. बड़ी बेटी ने भी, अपने पिता के समान गलत निर्णय लिया: उसने अपनी बहिन से कहा कि वे अपने पिता को दाख मधु पिलाएंगे ताकि उसको नशा आ जाए (देखें 9:20, 21)। जब वह नशे में सो रहा होगा तो उसने यह योजना बनाई कि वे **उसके साथ सोएंगे** [लैंगिक संबंध बनाएंगे] **ताकि वे अपने पिता के द्वारा वंश बचाए रखें**। हालांकि कुछ विद्वान उनके इस कार्य को यह कहकर उचित ठहराते हैं कि परिस्थिति के अनुसार उनके विचार उचित थी क्योंकि वे निराश थे, लेकिन विवाह के उच्च दृष्टिकोण, जो 2:18-24 में प्रस्तुत किया गया है, के आधार पर उनके यह कार्य न्यायोचित नहीं था और कालांतर में मूसा की व्यवस्था में इस प्रकार के कार्यों की निंदा भी की गई है (लैव्य. 18:6)। और तो और, इस योजना पर कार्य करना तो निंदनीय है ही क्योंकि इसमें बेईमानी और धोखाधड़ी शामिल है। वे जानतीं थी कि वे गलत कार्य कर रहीं हैं क्योंकि वे धोखे से अपने पिता को दाखमधु पिलाकर उसके साथ यौन संबंध करना चाहती थीं। यद्यपि, लूत को भी इस मामले में पूरी तरह से दोषमुक्त नहीं किया जा सकता है। उसकी बेटियां जानतीं थीं कि वह दाखमधु के प्रति अति संवेदनशील है और यह उसका कमज़ोर चरित्र और प्रभावहीनता दिखाता है।

आयत 33. घिनौने संबंध के कुछ विश्लेषण यहाँ उपलब्ध है, **उसी दिन रात के समय उन्होंने अपने पिता को दाखमधु पिलाया**। जब वह नशे में था तो पहली बेटी ने जाकर उसके साथ यौन संबंध बनाया **पर उसने न जाना, कि वह कब लेटी, और कब उठ गई**। दूसरे शब्दों में, जो कुछ घटित हुआ उसके प्रति वह अज्ञान था।

आयतें 34, 35. फिर से दूसरी रात, उन्होंने लूत को दाखमधु पिलाने की योजना रची ताकि **दूसरी बेटी भी** उसके साथ लैंगिक संबंध बना सके। पहले की भाँति, **उसने न जाना, कि वह कब लेटी, और कब उठ गई** इसलिए वह न जानता था कि क्या हुआ। मूलपाठ यह नहीं बताता है कि उन्होंने उसे दाखमधु परोसी या फिर **दाखमधु पीने** के लिए उसे उत्साहित किया; वाक्यांश यह बताता है कि उन्होंने उसको अधिक पिलाया ताकि उसको नशा आ जाए। उन्होंने लगातार दो रातों तक ऐसा किया। इस पूरे घटना में लूत निष्क्रिय कमज़ोर प्राणी जान पड़ता

है जो अपने बेटियों के दबाव में अधिक दाखमधु पीता है और वह पूरी तरह इस बात से अज्ञात है कि किस प्रकार उन्होंने उसका लैंगिक रूप से दुरुपयोग किया।

यहाँ यह नहीं पता कि पहाड़ों की गुफाओं में छिपे होने के बाद भी इस घटना को अंजाम देने के लिए उसकी बेटियों ने इतना ज़्यादा दाखमधु कहाँ से प्राप्त किया। यदि दाखमधु या दाख की बारी यर्दन घाटी के आसपास थी तो यह इस बात का प्रमाण है कि सदोम और अमोरा के साथ सभी लोग नाश नहीं हुए जो अभी भी आस पास के क्षेत्र में पाए जाते थे। ऐसी स्थिति में, धोखाधड़ी का हथकंडा अपनाकर इन स्त्रियों को अपने पिता के द्वारा संतान उत्पन्न करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

आयत 36. कौटुम्बिक यौन संबंध का परिणाम यह हुआ कि लूत की **दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुईं**। इस संबंध में कोई जानकारी नहीं दी गई है कि उन्होंने कब और कैसे लूत को यह खबर दी कि क्या हुआ है और यह उसको कैसे कहा होगा कि वह उनके अजन्में बच्चे के पिता हैं। ये सारे विवरण पाठक की कल्पना तक ही छोड़ा गया है।

आयतें 37, 38. इस अध्याय की आखिरी दो आयतों में लेखक का इस्राएल के पड़ोसियों की वंशावली लिखने की मंशा दिखाई देती है (तुलना करें 10:1-32; 25:12-18; 36:1-43)। लूत की कहानी का अंत उसके **प्रथम बेटी** के **बच्चा** पैदा होने के साथ होता है। इस बच्चा का नाम मोआब रखा गया जिसका अर्थ "पिता के द्वारा" है।[17] वह **मोआबियों का पिता हुआ**।

उसी तरह, छोटी बेटी ने भी एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम **बेनअम्मी** रखा। "बेनअम्मी" का तात्पर्य "मेरे लोगों का पिता" है। इसका उपयुक्त अनुवाद "मेरे रिश्तेदार का बेटा" होना चाहिए क्योंकि यहाँ पर ज़ोर एक पुरुष रिश्तेदार या एक "पैतृक रिश्तेदार"[18] पर है। वह **अम्मोन वंशियों का पिता हुआ**।

आज तक जैसे अभिव्यक्ति यह दर्शाता है कि मूसा ही इसका लेखक था। यह उस समय की बात है जब इस्राएलियों ने कनान पर अधिकार जमाना प्रारंभ नहीं किया था और मोआबियों तथा अम्मोनियों का राज्य भी उनके आधीन नहीं हुआ था।

उनके पैदा होने में कौटुम्बिक व्यभिचार का छाया होने पर भी यह वृतांत इन दोनों बेटों के बारे में उपेक्षापूर्ण बातें नहीं करता है। संभवतः लेखक को अपने पाठकों की नैतिक दृष्टिकोण मालूम है इसलिए वह इन बेटियों की निंदापूर्ण बर्ताव का विश्लेषण नहीं करता है। फिर भी, कई पीढ़ियों के बाद जब इस्राएली लोग जंगल में थे तो परमेश्वर ने मूसा को यह निर्देश दिया था कि वह मोआबियों या अम्मोनियों का अपमान न करे क्योंकि उसने उन्हें लूत के संतान के रूप में ज़मीन का एक हिस्सा दिया है (व्यव. 2:9, 19)। यह तो बाद की घटना है जब मोआबियों एंव अम्मोनियों ने इस्राएल के लोगों के साथ सहानुभूति नहीं जताई और उन्हें कनान की ओर कूच करने के लिए मार्ग नहीं दिया तो उनके मध्य शत्रुता बढ़ी (व्यव. 23:3, 4)।

तब मोआबियों का राजा बालाक ने बालाम को किराए पर लिया ताकि वह इस्राएलियों श्राप दे कि वह उनको युद्ध में हरा सके (गिनती 22-24)। जब यह योजना असफल रही तो मोआब के स्त्रियों ने इस्राएली पुरुषों को मोहा कि वे उनके साथ अनैतिक यौन संबंध बनाए और मूर्ति पूजा करे जिसके कारण इस्राएलियों पर परमेश्वर का न्याय आया (गिनती 25:1-9)।

मूसा के बाद और पुराने नियम के अधिकांश हिस्से में, इस्राएलियों और मोआबियों का अधिकांश समय आपसी दुश्मनी में गुज़रा (देखें न्यायियों 3:12-30; 10:6-11:33; 1 शमूएल 11:1-11; 2 शमूएल 10:1-14; 2 राजा 3:4-27; सप. 2:8-11)। इसमें सबसे अधिक दुःखद बात यह है कि सुलैमान और उसके बाद के राजाओं ने उनके देवताओं की आराधना की जिसके कारण परमेश्वर के लोगों के मध्य विभाजन हो गया और इस प्रकार दोनों साम्राज्यों का पतन हुआ (देखें 1 राजा 11:5-11; 2 राजा 16:1-4; 17:6-18; 21:1-16; 23:10-13; 24:1-4)।

अनुप्रयोग

संसार के साथ मित्रता की त्रासदी (19:1-29)

अध्याय 19 लूत का अब्राहम से अलग होने के बाद उसके आत्मिक पतन का दुःखद परिणाम बताता है। यह निर्दोषता की अवस्था से प्रारंभ हुआ जब उसने यर्दन घाटी के निकट मृत सागर की ऊपजाऊपन से आकर्षित होकर सदोम की ओर जाकर अपनी तंबू गाड़ने की सोची (13:10-13)। क्या लूत ने वहाँ के लोगों की दुष्टता के विषय सुना था? क्योंकि इससे पहले कि अब्राहम मिस्र की ओर जाता, उसने मिस्र के लोगों की दुष्टता के बारे में सुना था (12:10-13), तो यह मानना लाज़मी हो जाता है कि उसने और उसके भतीजे लूत ने सदोम के आसपास के लोगों के पाप के बारे में सुना होगा। जबकि अब्राहम ने स्पष्ट रूप से अपने मिस्र प्रवास के दौरान वहाँ के अनुभव से बहुत कुछ सीखा था तो वहीं लूत ने अपने निर्णय के भयंकर परिणाम से अपनी आँखें मूँद ली थी। इस वृतांत से हम यह सीखते हैं कि जब हम अपने आपको ईश्वर के संपर्क से अलग कर लेते हैं तो हम बड़े खतरे में फँस जाते हैं (1 कुरिं. 15:33)।

बुरी संगति, नैतिक मूल्यों को भ्रष्ट करती है। कोई भी दूसरों के प्रभाव से अछूता नहीं रहता है। सर्व प्रथम, लूत ने जब अब्राहम की संगति से अलग होकर यर्दन घाटी के निकट सदोम में रहने का निर्णय लिया तो उसके मन में इसका अहसास था। कालांतर में पतरस ने उसको "धर्मी" इस भाव से कहा कि जब वह उस नगर में गया तो वह स्वयं उनके पापों में लिप्त नहीं हुआ। फिर भी, उसका मन बोझिल हो गया था और "हर दिन ऐसे दुष्टता" की यातना सहने लगा (2 पतरस 2:7, 8)।

पहली बार लूत, अब्राहम के हस्तक्षेप के द्वारा उस समय बचाया गया जब उसको बंदी बनाकर बंधुआई में ले जाया जा रहा था (14:12, 16); इसके

बावजूद वह सदोम को गया। इस प्रकार के अनुभव ने उसको चेतावनी दी होगी कि उसका जीवन परमेश्वर के साथ ठीक नहीं है; परंतु यदि ऐसा विचार उसके मन में आया भी होगा तो उसने उसे गंभीरता से नहीं लिया। इसके बजाय वह उसी नगर में गया और अपने आपको उसके बुराई में शामिल किया। उसने संभवतः यह तर्क किया होगा कि वह और उसका परिवार इससे प्रभावित नहीं होगा परंतु ऐसा नहीं हुआ।

हमें इस बात से सचेत रहना होगा कि हम कहाँ रहते हैं और कहाँ कार्य करते हैं और हमने किसके साथ घनिष्ठ संबंध बना लिया है। याकूब ने कहा, "संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है" (याकूब 4:4)। हमें इस बात की भी चिंता करनी है कि हमारे बच्चे किनके साथ मित्रता करते हैं। जवानों को अक्सर दूसरों के द्वारा पसंद तथा स्वीकार किए जाना अच्छा लगता है और तब ऐसे स्थिति में उन पर हमेशा यह दबाव बना रहता है कि वे "संसार के सदृश बन जाएं" (रोमियों 12:2)। यह किसी के लिए भी, विशेषकर बच्चों का अपने संगी दोस्तों के विपरीत होना अत्यंत कठिन है।

हम संसार से बच नहीं सकते हैं; हमारे सामने चुनौती यह है कि हमें संसार में रहना है लेकिन इस संसार का नहीं होना है (यूहन्ना 17:14-18)। यीशु हमारा आदर्श है। हम अपने आपको संसार के आधीन किए बिना इसे कैसे बदल सकते हैं, इस आदर्श के द्वारा सीखने को मिलता है। अधिकांश लोग इस संसार का दबाव अपने आप नहीं झेल पाने में सक्षम नहीं हैं। बुद्धिमान ने एक बार ऐसा कहा, "एक से दो अच्छे हैं, ... क्योंकि यदि उन में से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा" (सभो. 4:9, 10)। आगे उसने यह भी जोड़ा, "यदि कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो, परन्तु दो उसका सामना कर सकेंगे" (सभो. 4:12)। इन आयतों का विषय शारीरिक क्षमता है और इसमें एक मित्र दूसरे गिरे हुए मित्र को बल देता है; यही सिद्धांत उस मित्र पर भी लागू होता है जो नैतिक और आत्मिक सामर्थ्य उस मित्र को देता है जो धमकियां, परीक्षा, तिरस्कार और सताव का सामना कर रहा है। इसी लिए प्रभु ने अपने शिष्यों को दो दो करके भेजा (मरकुस 6:7)। लूत के आत्मिक जीवन का पतन इसी कारण हुआ होगा जब उसने अब्राहम का साथ छोड़कर सदोम के पड़ोस में जाकर रहने का निर्णय लिया था।

बुरी संगति हमारे जीवन के महत्वपूर्ण विषयों को सूची से हटा देता है। यह एक व्यक्ति को उसकी आमोद प्रमोद, दैनिक आवश्यकता, उपलब्धियां और संपत्ति पर केन्द्रित रहने के लिए विवश करता है। लूत को परमेश्वर पर इतना विश्वास नहीं था कि वह परमेश्वर को अपने जीवन में प्रथम स्थान दे या इस बात को भी नहीं पहचान सका कि सदोम, उसके और उसके परिवार तथा उसके चरवाहों और उनके परिवार के लिए कैसे कैसे शारीरिक और आत्मिक खतरे पैदा कर सकता है।

हमें लूत के प्रारंभिक जीवन के बारे में बहुत थोड़ी जानकारियां प्राप्त है। जब परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया तो उसका परिवार मूर्तिपूजा करता था (यहोशू

24:2) और उसका पिता हारान का उनके ऊर छोड़कर कनान की ओर जाने से पहले देहांत हो गया था (11:28, 31)। कोई भी अनुच्छेद इस बात को स्पष्ट नहीं करता है कि उसके दादा तेरह या उसके चाचा नाहोर ने एक सत्य जीवित परमेश्वर पर विश्वास किया। इस कारण कोई अनुच्छेद यह नहीं कहता है कि लूत एक विश्वासी था लेकिन यह अनुमान लगाया जाता है कि उसने अपने चाचा अब्राहम के द्वारा परमेश्वर पर थोड़ा विश्वास जताया होगा। हम ऐसा कहीं भी नहीं पढ़ते हैं कि उसने अब्राहम के समान एक वेदी बनाई या प्रार्थना की या परमेश्वर की आराधना की। हम केवल दुष्ट सदोम वासियों के बुरे कार्यों के विपरीत लूत को एक धर्मी व्यक्ति रूप में पढ़ते हैं जिसने उसके हृदय को उत्पीड़ित किया (2 पतरस 2:7, 8)।

पाठ यह भी नहीं कहता है कि लूत ने परमेश्वर को उसके अपरंपार आशीषों के लिए धन्यवाद दिया; न ही वह इस बात से धन्यवादित है कि स्वर्गदूत ने उसे आने वाले विनाश से बचाया। इसके बजाय, वह उन स्वर्गीय संदेशहारियों का अवरोध बना जो उसको तथा उसके परिवार को बचाना चाहते थे। उनके निर्देशानुसार पहाड़ों में शरण लेने के बजाय उसने उनसे सोअर में जाने की विनती की। सदोम के प्रति उसका इतना ज़बरदस्त आकर्षण था कि उसको वहाँ से खींच के बाहर निकालना पड़ा। हालांकि उसने अपने दामादों को इसकी चेतावनी दी लेकिन स्पष्ट रूप से उसने अपने चरवाहों तथा परिवार वालों को इससे अनभिज्ञ रखा। उसकी प्राथमिकताएं मिट चुकी थीं और वह उस दुष्ट नगर सदोम को छोड़ कुछ और नहीं सोच पा रहा था। जब यीशु ने यरूशलेम का विनाश देखा (देखें मत्ती 24:2, 16-21) तो उसने लोगों को यह कहकर चेतावनी दी कि "लूत की पत्नी को स्मरण रखो" (लूका 17:32) और पीछे मुड़कर अपने घरबार और संपत्ति देखने की भी चेतावनी दी।

बुरी संगति, एक व्यक्ति का उसके मित्रों, परिवार और सहयोगियों पर अच्छे प्रभाव को नाश कर सकता है। लूत कुछ समय के लिए सदोम वासियों के बुरे कार्यों के विरूद्ध कुछ बोले बिना उनके बुरे वातावरण में रहा। उसके अच्छाई का कमज़ोर प्रभाव, उन लोगों को रोकने की प्रयास पर प्रभावहीन दिखाई दिया जो उसके छत तले आए मेहमानों (स्वर्गदूतों) के साथ संभोग करना चाहते थे (19:8)। उसने एक दुर्भाग्यपूर्ण सुझाव दिया कि यदि वे लोग अपनी वासना का प्यास बुझाना चाहते हैं तो उन मेहमानों को छोड़कर जो उस नगर में आए थे, उसके दो कुँवारी बेटियों से कर सकते हैं। बजाय इसके कि वह भली और उचित बातों के लिए खड़ा होता, लूत ने वह सुझाव दिया जो उन दोनों में से कम बुरा था: अपनी दो असहाय बेटियों को उन दरिंदों के हाथ में सौंपना। यह उसकी धार्मिकता का वर्णन करता है कि उस बुरे वातावरण में रहकर वह किस हद तक गिर गया था। ऐसा लगता है कि वह एक गुप्त शिष्य होने के बजाय उसने अपना नैतिक दिशा सूचक यंत्र सदोम वासियों के भय के कारण खो दिया था (यूहन्ना 19:38)। अन्य जातियों के नगर में ज्योति होने के बजाय, उसने अपने दिए को

टोकरी के नीचे छिपा दिया (मत्ती 5:15) ताकि इसको वे न देखा पाएं जिनको इसकी अत्यंत आवश्कता थी।

इसका केवल अनुमान ही किया जा सकता है कि उन दोनों बेटियों के मन में क्या गुजरा होगा जब उनके पिता ने उन्हें कामातुर भीड़ को सौंपने की सुझाव दिया। संभवतः उन्होंने उसके तथा उसके परमेश्वर, यदि उसने कभी उन्हें यहोवा या अब्राहम के परमेश्वर के बारे में बताया होगा, तो उसके प्रति सारा सम्मान खो दिया होगा। उन दोनों की रक्षा करने के बजाय उन्हें उस दुष्ट भीड़ को सौंपने के द्वारा, संभवतः उन्होंने यह अनुमान लगाया होगा कि उनके पिता ने उस बेशर्म भीड़ को अपनी बेटियों से अधिक महत्व दिया (देखें 1 यूहन्ना 2:15, 16)। क्या यह उन दोनों बेटियों ने यह तर्क किया होगा कि बच्चे रहित रहने के बजाय अपने पिता के साथ व्यभिचार करना तो कामातुर भीड़ का उन पर टूट पड़ने से कम गुनाह है।

लूत के घर के बाहर लोगों का उसके प्रति बड़ी ही कट्टर प्रतिक्रिया थी कि एक विदेशी उन पर न्यायी के भाँति कैसे कार्य कर सकता था। उन्होंने उसे उन दो आगंतुकों को उनके हवाले ने करने की अधिक बुरे परिणाम की चेतावनी दी (19:9)।

लूत से संबंधित हमें यह प्रश्न पूछना चाहिए, "उसने अपने चरवाहों तथा उनके परिवारों को यर्दन घाटी में आने वाले विनाश के प्रति चेतावनी क्यों नहीं दी जिससे कि वे भी इस विनाश से बच सके?" क्या उसने यह सोचा वे इस विनाश के विषय उसका मज़ाक उड़ाते कि वह मज़ाक कर रहा है, जैसे कि उसके दामादों ने किया (19:14)? क्या उसने उन लोगों के साथ विश्वास खो दिया था जिनके हवाले उसने अपने भेड़ बकरियाँ कर दी थी? मूल पाठ इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं देता है; परंतु यदि लूत ने स्वर्गदूत के साथ विवाद करने में समय बर्बाद न किया होता तो उसके पास उन विश्वासयोग्य चरवाहों को आने वाले खतरे से चेतावनी देने के लिए पर्याप्त समय था।

लूत, उसकी पत्नी और उसके बेटियों का संसार के प्रति प्रेम (1 यूहन्ना 2:15) इतना प्रगाढ़ था कि वे अपना घर तथा संपत्ति छोड़ना नहीं चाहते थे। स्वर्गदूतों को उनको अपने हाथों से खींचकर सदोम से बाहर निकालना पड़ा (19:16)। लूत और उसकी पत्नी ने सदोम में धन जमा कर रखा था (देखें मत्ती 6:21, 24); और जब वह उनके हाथों से निकल गया तो वे लाचार मनुष्य के भाँति हो गए।

बुरी संगति का अभ्यास, यदि रोका न गया तो वह परमेश्वर के विनाशक न्याय का सामना करा सकता है। "क्योंकि परमेश्वर प्रेम है" (1 यूहन्ना 4:8), तो उसका प्रथम इच्छा सदैव यह है कि वह पतित संसार का उद्धार करे (यूहन्ना 3:16)। वह मानवजाति के साथ इस आशा से धीरज धरता है कि उपद्रवी व्यक्ति उसके ओर फिरेंगे और उद्धार पाएंगे (निर्गमन 34:6, 7)। परंतु जब भी हृदय कठोर किया जाता है तो मनुष्य के पापों का घड़ा भर जाता है और तब परमेश्वर अपश्चातापी मनुष्य को बर्दाश्त नहीं करता है और अपने धार्मिक न्याय का

प्रकटीकरण वह दुष्टों पर पाप के विरूद्ध विनाश भेजकर करता है (18:20, 25)। यह उसने अध्याय 6 से 8 में नूह के समय में किया और उसने यह दोबारा सदोम और अमोरा में गंधक और आग बरसाने के द्वारा किया (19:24, 25)।

जिस दुष्ट नगर में लूत रहता था वह यीशु के शिक्षा का एक उदाहरण बन गया। उसने कहा कि "जो आश्चर्यकर्म" उसने कफरनहूम में दिखाए "यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता"; इसलिए उसने कहा, "न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी" (मत्ती 11:23, 24)। लूत के दिनों में "लोग खाते पीते, लेन देन करते, पेड़ लगाते और घर बनाते थे। परन्तु जिस दिन लूत सदोम से निकला, उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को नाश कर दिया।" यीशु ने घोषणा की "मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा" (लूका 17:28-30)।

लूत के समय की यर्दन घाटी की उपजाऊ भूमि पर स्थित नगरों का विनाश, यहाँ किए गए पापों के विरूद्ध परमेश्वर के धर्मी न्याय का मूकदर्शक गवाह है। यह घटना, इस प्रकार के पाप करने वालों के लिए पूर्व सूचना तथा चेतावनी है कि परमेश्वर का अंतिम न्याय आ रहा है (रोमियों 1:18-32; 2 पतरस 2:6-10; यहूदा 7)। धर्मी को आने वाले परिणाम से घबराने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर का अपने लोगों के लिए यह संदेश है कि यीशु का संसार के पापों के लिए प्रायश्चित की मृत्यु के कारण वह उन सभी का उद्धार करेगा जो उस पर विश्वास करते हैं और जो अपने जीवन के द्वारा उसकी महिमा करते हैं (1 थिस्स. 5:1-11; 2 पतरस 2:7-9)। जो उद्धार पाना चाहते हैं उन्हें परमेश्वर के संदेश को विश्वास और आज्ञाकारिता में ग्रहण करके पापों से पश्चाताप करना चाहिए और पाप क्षमा हेतु उसमें बपतिस्मा लेना चाहिए (प्रेरितों. 2:38; रोमियों 10:8-10)।

समाप्ति नोट्स

[1]अतिरिक्त जानकारी के लिए, देखें फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राईवर, एंड चार्ल्स ए. ब्रिग्गस, *ए हिब्रू एंड इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ दी ओल्ड टेस्टामेंट* (ऑक्सफ़ोर्ड: क्लेयरडन प्रेस, 1962); 1059. [2]विक्टर पी. हैमिलटन, *दी बुक ऑफ़ जेनेसिस: चैप्टर्स 18-50*, दी न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री ऑन दी ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: डब्लयुएम. बी. अड्र्समैन पब्लिशिंग को., 1995), 33, n. 25. [3]ब्राउन, ड्राईवर, एंड ब्रिग्गस, 394. [4]डब्ल्यू. स्कोटरोफ़, "ידע," *थियोलोजिकल लेक्सिकन ऑफ़ दी ओल्ड टेस्टामेंट* में, ट्रांस. मार्क ई. बिडल, एड. अन्स्ट जेन्नी एंड क्लॉस वेस्टरमैन (पीबडी, मास.: हेंडरीकसन पब्लिशर्स, 1997), 2:515. [5]हेराल्ड जी. स्टिगर्स, "גּוּר," *TWOT* में, 1:155. [6]जॉन टी. विलिस, *उत्पत्ति*, दी लिविंग वर्ड कमेंट्री (ऑस्टिन, टेक्स.: स्वीट पब्लिशिंग को., 1979), 266. [7]कार्ल शुट्ज़, "עָוֹן," *TWOT* में, 2:650. [8]एडविन यामुची, "חֵן," *TWOT* में, 1:302-3. [9]ब्राउन, ड्राईवर, एंड ब्रिग्गस, 338. [10]अब्राहम के वृतांत में घटी कई घटनाओं को समय के साथ बताया गया है। इनकी सूची के लिए, देखें हैमिलटन, 42.

[11]यरदन की घाटी ग्रेट रिफ्ट वैली का हिस्सा है, जो पृथ्वी की सतह पर सबसे लम्बी और सबसे गहरी दरार है, और जहाँ पर हर शताब्दी में एक बड़ा भूकम्प औसतन आता है। (जॉर्ज ए. टर्नर, "भूकम्प," *दी इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबिल एनसायक्लोपेडिया*, रिव. एड., एड. जेफ्री

डब्ल्यू. ब्रोमिली [ग्रैंड रैपिड्स, मीच.: वम. बी. अड्र्समैन पब्लिशिंग को., 1982], 2:4.) [12]ब्रूस के. वाल्टके, *जेनेसिस: ए कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मीच.: ज़ोनडरवैन पब्लिशर्स, 2001), 279. [13]डेरेक किडनर, *जेनेसिस: एन इंट्रोडक्शन एंड कमेंट्री*, दी टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, बीमार.: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1967), 135. [14]विसडम ऑफ़ सोलोमन 10:7 (NRSV)। [15]जोसिफस *एंटीक्विटिस* 1.11.4. [16]ब्राउन, ड्राईवर, एंड ब्रिग्ग्स, 461. [17]गॉर्डन जे. वैनहैम, *जेनेसिस 16-50*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वोल्यूम 2 (डालसः वर्ड बुक्स, 1994), 62. [18]हैमिल्टन, 53, नोट 12.